अध्याय चतुर्थ

नगरीय स्थानीय स्वशासन निकायो में महिला प्रतिनिधियों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि व राजनीतिक चेतना का विश्लेषण

- महिला प्रतिनिधियों का सामाजिक–आर्थिक परिचय
- महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक चेतना का विश्लेषण

अध्याय चतुर्थ

नगरीय स्थानीय स्वशासन निकायों में महिला प्रतिनिधियो की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि व राजनीतिक चेतना एवं जागरूकता का विश्लेषण

भारत एक विविधतापूर्ण संस्कृति से परिपूर्ण समृद्ध देश है। यह विविधता क्षेत्रीयता के आधार पर शहरों, गाँवों तथा कस्बों तक दिखायी देती है। भारत के हरियाणा राज्य के कुरूक्षेत्र जिले में भी यही विविधता परिलक्षित होती है। यहाँ जाति, धर्म, विचारधारा, लिंग एवं असमान आर्थिक स्थिति के लोग निवास करते हैं। क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि व्यक्ति की प्रकृति, व्यवहार, विचार, मूल्यों, राजनीतिक जागरूकता एवं चेतना तथा राजनीतिक संस्कृति एवं राजनीतिक समाजीकरण को प्रभावित करती है। इस संदर्भ में उत्तरदाता की पृष्ठभूमि का विश्लेषण विशेष महत्त्व रखता है।

सामाजिक आनुभाविक अध्ययन के लिए यह जरूरी है कि उत्तरदाता का परिचय लिया जाए क्योंकि जिन व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है उनका परिचय देना आवयश्क होता है। कोई भी शोध कार्य बिना उत्तरदाता के संभव नहीं है क्योंकि उत्तरदाता ही शोध कार्य की आधार–शिला होता है।

उत्तरदाता किसी भी शोध कार्य की रीढ़ होता है तथा उसकी प्रकृति पर ही शोध की अभिव्यक्ति निर्भर करती है। इसलिए उत्तरदाता का परिचय शोधकार्य में आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता कुरूक्षेत्र जिले की नगपालिकाओं की महिला सदस्य हैं, जो जिले की राजनीतिक अभिजन हैं। उनकी रूची, रूझान तथा चेतना का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है ताकि शोध कार्य को सरलता से समझा जा सके।

उत्तरदाता का वर्गीकरण

राजनीति में भागीदारी के स्तर को जानने के लिये महिला प्रतिनिधिओं को ही चुना गया है ताकि महिला राजनीतिक सहभागिता में वास्तविक एवं यथार्थपरक अध्ययन संभव हो सके।

आयु के आधार पर

आयु का सामाजिक मनोवैज्ञानिक व सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाज में व्यक्ति का पद व कार्य आयु के आधार पर निर्धारित होते है। जन सहभागिता को आयु के आधार पर ही मापा जाता है। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि अधिक आयु के व्यक्ति कम आयु वालों की अपेक्षा अधिक अभिमुखी होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 25 वर्ष से लेकर सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है।

आयु एक ऐसा तत्व है जो समाज में व्यक्ति का पद, भूमिका, दायित्व एवं कार्यों का निर्धारण करती हैं ऐसा माना जाता है कि अधिक आयु वर्ग के लोग अधिक अनुभवी एव ज्ञानी होते है। अतः राजनीति में प्रतिनिधित्व एवं सहभागिता की दृष्टि से भी अधिक आयु वर्ग की भूमिका होती है। किन्तु वयस्क मताधिकार, राजनीतिक जागरूकता, शिक्षा एवं लोकतंत्र के प्रसार के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में यह परम्परागत धारणा अब बदल रही है। अधिक आयु परम्परावादी पोषक मानी जाती है जबकि शिक्षा विज्ञान–तकनीकी के प्रसार के फलस्वरूप ऊर्जा, सक्रियता, बाह्य सम्पर्क, नवाचार, ई–जानकारी, रचनात्मक परिवर्तन की क्षमता तथा उत्साह, कम आयु वाले लोगों के पास भी दिखाई देते हैं।

राजनीतिक सहभगिता सम्बन्धी अधिकांश अध्ययनों द्वारा स्पष्ट होता है कि मध्यम आयु वर्ग तक राजनीति में सहभागिता बढ़ती है और उम्र बढ़ने के साथ–साथ धीरे–धीरे कम होती जाती है अतः प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर विश्लेषण

किया गया है।

तालिका संख्या 4.1

क्रम संख्या	आयु	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	25–35	7	22.58
2	36–45	16	51.61
3	46–55	5	16.13
4	56 से अधिक	3	9.68
कुल		31	100

आयु के आधार पर

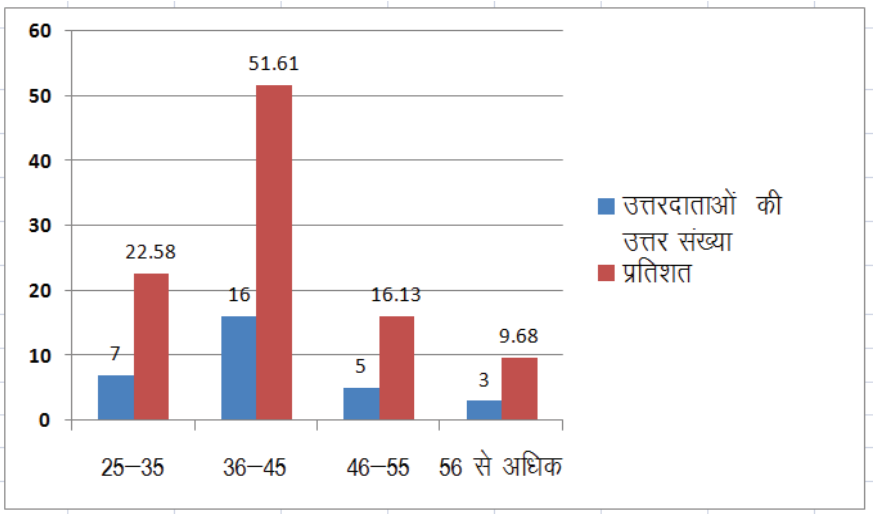

आवृति संख्या 4.1

प्रस्तुत तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट होता है कि कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिका में 25 से 35 वर्ष की आयु वर्ग में 22.58 प्रतिशत, 36–45 की आयु वर्ग में 51.61 प्रतिशत, 46–55 की आयु वर्ग में 16.13 प्रतिशत तथा 56 से ऊपर की आयु वर्ग में 9.68 प्रतिशत उत्तरदाता हैं।

अतः जनप्रतिनिधि वर्ग में सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है लेकिन अधिकांश प्रतिशत 36 से 45 वर्ष तक की आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का

है। इसका कारण यह है कि यहां गतिविधियों के चयन का आधार उनके अनुभव को माना गया है।

वर्तमान युग में राजनितिक क्षेत्र में युवा वर्ग एवं मध्यम वर्ग की आयु के लोगों की जागरूकता काफी बढ गई है। परन्तु समाज में नगरीय संस्थाओं के चुनावों में ज्यादातर अधिक आयु एवं अनुभवी लोग भाग लिया करते हैं।

शिक्षा का स्तर

शिक्षा मानव के व्यक्तित्व के विकास का एक ऐसा कारक है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत तथा क्षमतावान बनाती हैं शिक्षा का अर्थ अनुभवों का निर्माण एवं पुर्नर्निमाण है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास का महत्त्वपूर्ण एवं सर्वोत्तम माध्यम हैं। शिक्षा ही वह मार्ग है जिससे व्यक्ति ज्ञान के दीप द्वारा प्रकाशित होकर अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्त होता है। शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक में समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है।

इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक सभी प्रकार का समाजीकरण करके उसके चरित्र तथा व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

ऐसा माना जाता है कि शिक्षित व्यक्तियों में सजगता, जागरूकता, घटनाओं को समझने, परिवर्तन एवं निर्णय लेने की अधिक क्षमता होती है। शिक्षित वर्ग में राजनीति के प्रति ज्ञानात्मक जागरूकता अधिक होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में महिला राजनीतिक सहभागिता के विश्लेषण हेतु महिला उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर को जानने का प्रयास किया गया है जिसमें शैक्षणिक स्तर को 6 भागों में विभक्त कर महिलाओं के वास्तविक स्तर को जानने का प्रयास किया गया है। साक्षर स्तर में वे उत्तरदाता शामिल है जो हस्ताक्षर अथवा अपने नाम लिखना जानती हैं। प्राथमिक व माध्यमिक स्तर में 5वीं एवं 8वीं तथा सैकण्डरी एवं सीनियर

सैकण्डरी में 10वीं एवं 12वीं पास तथा उच्च शिक्षा स्तर में स्नाकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त महिला उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है।

अतः अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है जिसके लिये कुरूक्षेत्र जिले की नगरपलिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं को लिया गया है।

तालिका संख्या 4.2

क्रम संख्या	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	प्राथमिक	–	–
2	माध्यमिक	2	6.45
3	सैकण्डरी	–	–
4	सीनियर सैकण्डरी	5	16.13
5	स्नातक	20	64.52
6	स्नातकोत्तर	4	12.90
कुल		31	100

शैक्षिक योग्यता के आधार पर

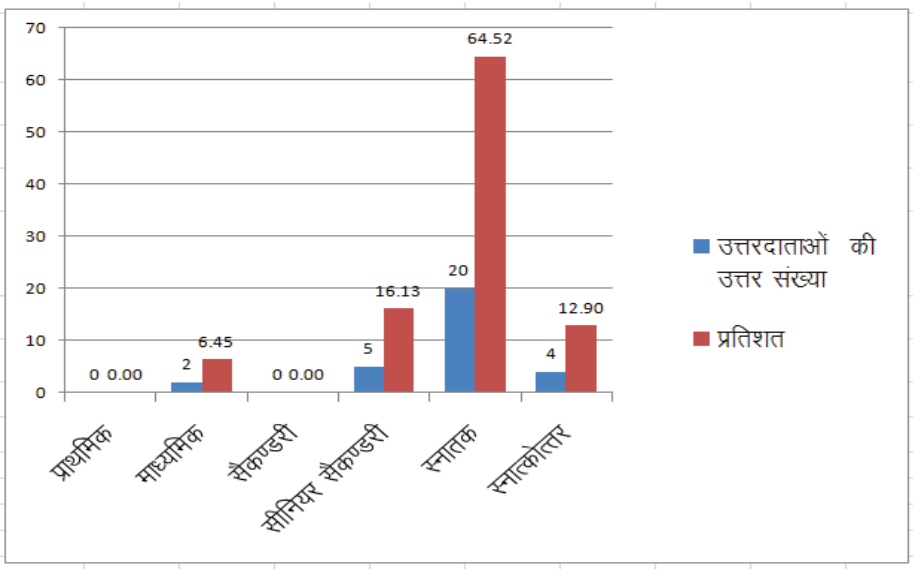

आवृति संख्या 4.2

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.2 से विदित होता है कि कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में 16.13 प्रतिशत पार्षद् सीनियर सैकेण्डरी तक शिक्षित हैं। 64.52 प्रतिशत स्नातक एवं 12.190 प्रतिशत स्नात्कोत्तर तक शिक्षित हैं।

अतः तथ्य स्पष्ट करते है कि कुरुक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला पार्षदों में शिक्षा का स्तर संतोषजनक है जो उनकी राजनीतिक जागरूकता एवं सहभागिता को भी प्रभावित करता है।

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में विवाह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। वैवाहिक जीवन हमारी भारतीय संसकृति व सभ्यता का एक आवश्यक अंग है। गृहस्थ जीवन का प्रारम्भ विवाह से होने के कारण मनुष्य को एक नई दिशा मिल जाती है। प्रायः यह माना जाता है कि विवाह मनुष्य को उसके उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित ही नहीं करता अपितु उसे ऐसा करने के लिए बाध्य भी करता हैं जिसका प्रभाव उसके जीवन से जुड़ी प्रत्येक भूमिका पर परिलक्षित होता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्तर की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.3

क्रम संख्या	वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	विवाहित	27	87.10
2	अविवाहित	3	9.68
3	तलाकशुदा	1	3.23
4	विधवा	–	–
कुल		31	100

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

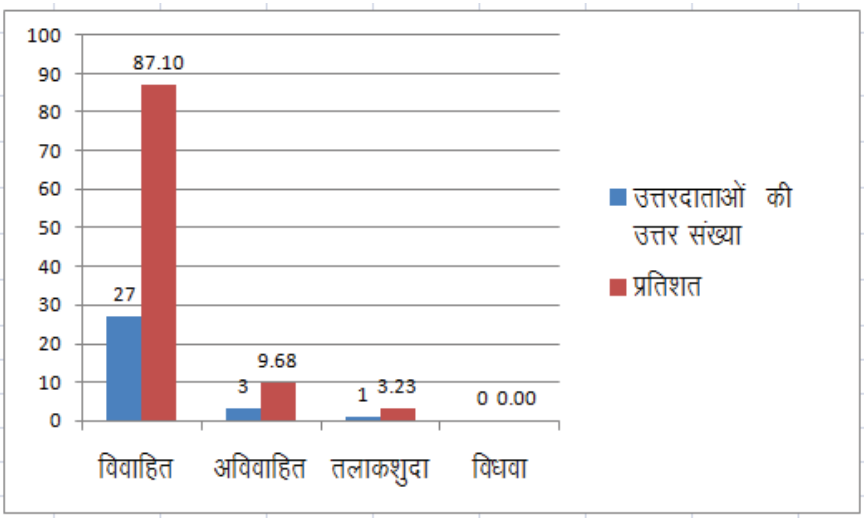

आवृति संख्या 4.3

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट होता है कि 87.10 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं। कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिलाओं में विवाहित महिला सदस्यों की संख्या सर्वाधिक है जबकि 9.68 अविवाहित और 3.23 तलाकशुदा हैं।

अतः स्पष्ट है कि विवाह जो कि भारतीय समाज की परम्परा व जीवन पद्धति है वह आज भी निरन्तरता लिये हुए है। तथ्यों से स्पष्ट होता है कि महिलाएं वैवाहिक स्थिति के आधार पर परिवार एवं समाज में अपनी स्थिति एवं भूमिका का निर्वाह करते हुए राजनीति के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बना रही हैं।

परिवार के आकार के आधार पर

नगरीय संस्थाओ में प्रतिनिधित्व को प्रभावित करने वाले कारको में से परिवार का आकार भी महत्त्वपूर्ण कारक है। क्योंकि परिवार व्यक्ति के जीवन की प्रथम पाठशाला है। परिवार वह संस्था है जहां वंशानुगत, सामाजिक, आर्थिक आदि कारकों के आधार पर व्यक्ति में विभिन्न गुणों का विकास होता हैं। पारिवारिक परिवेश, व्यक्ति के विकास, व्यवहार, भावी जीवन की दिशा एवं दशा का भी निर्धारण करता हैं इसी आधार पर

सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के सदस्यों का राजनीतिक अभिमुखीकरण ,जानकारी एवं सहभागिता ज्यादा होती है।

74वें संविधान संशोधन से पहले नगरीय संस्थाओ में संयुक्त परिवार के सदस्य अधिक निर्वाचित होते थे। संयुक्त परिवारों के पास अधिक साधन और अधिक बाहुबल होने के कारण छोटे परिवारों का इन संस्थाओं में कम प्रतिनिधित्व था। वर्तमान समय में एकल एवं संयुक्त परिवारों का प्रतिनिधिव बढ़ा है या घटा है जिसको जानने के लिये कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं से उनके परिवार के आकार को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.4

क्रम संख्या	परिवार का आकार	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	17	54.84
2	एकांकी परिवार	14	45.16
कुल		31	100

परिवार के आकार के आधार पर

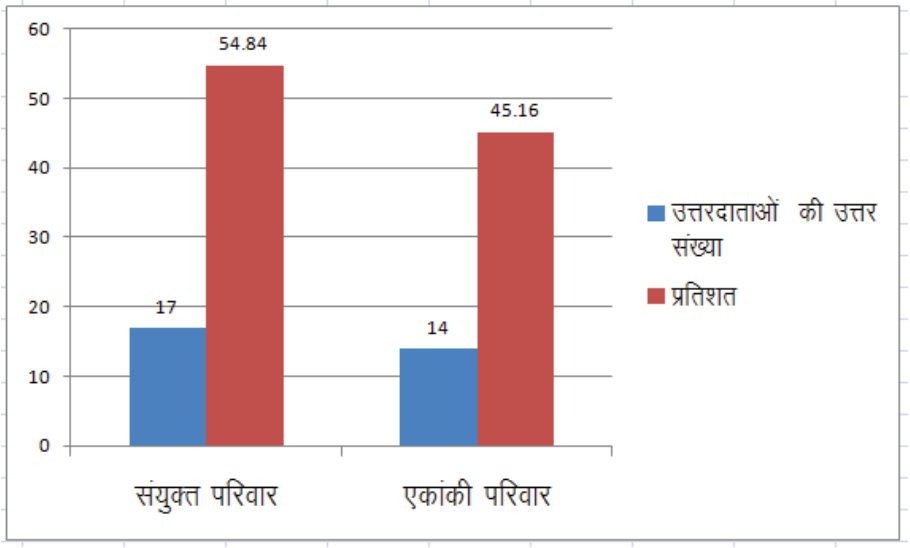

आवृति संख्या 4.4

तालिका संख्या 4.4 से यह सिद्ध होता है कि नगरीय संस्थओं में संयुक्त परिवारों का आधिपत्य है। कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में 54.84 प्रतिशत प्रतिनिधि संयुक्त परिवार से सम्बधिंत हैं तथा 45.16 प्रतिशत प्रतिनिधि एकांकी परिवार से सम्बधिंत हैं। जो यह दर्शाता है कि वर्तमान में भी लोगों का रुझान संयुक्त परिवारों की ओर अधिक है।

जाति के आधार पर

जाति भारतीय समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। समाज में जाति के आधार पर ही लोगों को उच्च व निम्न स्थिति प्राप्त होती है। उच्च जाति के लोग राजनीति में शासन की बागडोर आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। आरक्षण की व्यवस्था जाति के आधार पर की गई है। भारत में जाति की राजनीति में भूमिका का अध्ययन करते हुए **रजनी कोठारी** ने अपनी पुस्तक '**कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स**'[1] में स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि भारतीय राजनीति में जाति महत्त्वपूर्ण कारक है। जाति की राजनीति में बढ़ती भूमिका को रजनी कोठारी ने जाति का राजनीतिकरण कहा है। जाति के राजनीतिकरण की प्रक्रिया राष्ट्रीय, राज्य एवं क्षेत्रीय सभी स्तरों पर देखी जा सकती है। हरियाणा की राजनीति में जाटों का अधिक प्रभुत्व रहा है। यह प्रभुत्व मतदाताओं की संख्या, उम्मीदवार एवं प्रतिनिधियों के साथ–साथ मुख्यमंत्री एवं मंत्री मण्डल के निर्माण में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अतः कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं से उनकी जाति को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.5

क्रम संख्या	जाति वर्ग	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य वर्ग	14	45.16
2	अनुसूचित जाति	4	12.90
3	अनुसूचित जनजाति वर्ग	5	16.13
4	अन्य पिछडा वर्ग	9	29.03
कुल		31	100

1. **रजनी कोठारी** ,'कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स', ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2008

जाति के आधार पर

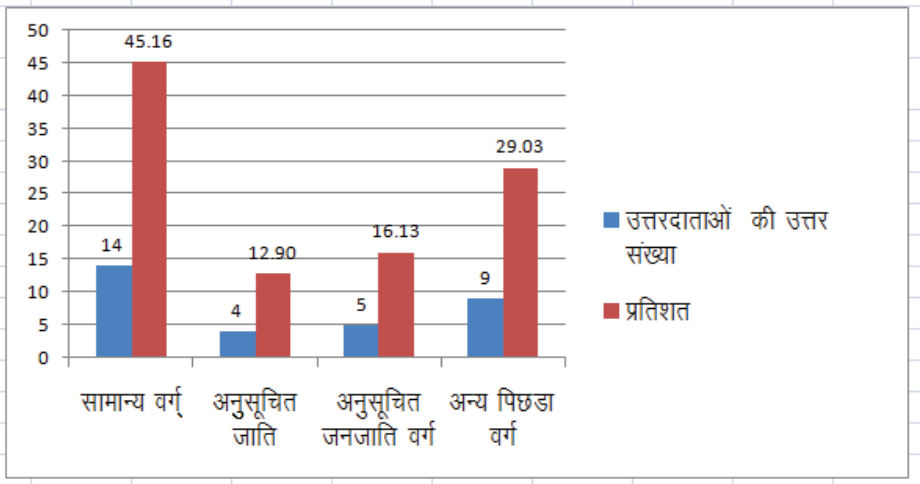

आवृति संख्या 4.5

प्रस्तुत तालिका संख्या 4.5 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग के जनप्रतिनिधि 45.16 प्रतिशत, अनुसूचित जाति के जनप्रतिनिधि 12.90 प्रतिशत, पिछड़े वर्ग के जनप्रतिनिधि की संख्या 29.03 प्रतिशत रही, वहीं अनुसूचित जनजाति का 16.13 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि आरक्षण के प्रावधान के कारण अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग कें प्रतिनिधियों को राजनीति मे आने का मौका मिला है। परन्तु अनुसूचित जाति की महिलाओं का जिला नगरपालिका स्तर पर प्रतिनिधित्व कम होने के कारण जिले की इन महिलाओं को सामाजिक संरचना एवं राजनीतिक व्यवस्था की कम जानकारी होना भी है।

आर्थिक स्थिति के आधार पर

किसी भी समाज में आय अथवा आर्थिक स्तर व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा, प्रस्थिति, भूमिका का आधार होती है। सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यक्ति की राजनीतिक समझ, जानकारी, रुचि, समाजीकरण, व्यवहार एवं सहभागिता आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित एवं निर्धारित होती है। यह सत्य है कि अधिक सम्पन्न व्यक्ति कम सम्पन्न व्यक्ति से राजनीतिक गतिविधियों में अधिक संलग्न एवं भागीदार होता है। कई

देशों में अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि आय एवं राजनीतिक सहभागिता में सम्बन्ध है।

ऐसा माना जाता है कि उच्च आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति अधिक सबल होने के कारण राजनीति में प्रभावी भूमिका अदा कर पाते है। परन्तु मध्यम आर्थिक स्थिति वालो की भूमिका निम्न व उच्च आर्थिक स्थिति वाले व्यक्तियों के बीच जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करती है, इस कारण इनकी राजनीति में सहभगिता अधिक होती है। अतः कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं से उनकी आर्थिक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.6

क्रम संख्या	आर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	निम्न	6	19.35
2	मध्यम	11	35.48
3	उच्च	14	45.16
कुल		31	100

आर्थिक स्थिति आधार पर

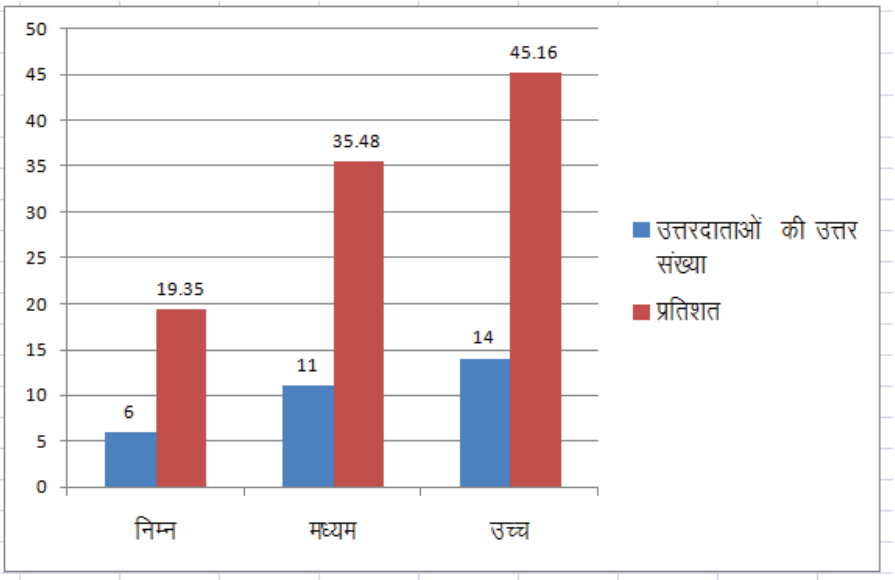

आवृति संख्या 4.6

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.6 से स्पष्ट होता है कि उच्च आर्थिक स्थिति वाले उत्तरदातओं का सर्वाधिक प्रतिशत 45.16 है। जबकि मध्य स्तर के उत्तदाताओं का प्रतिशत 35.48 एवं निम्न स्तर के उत्तरदाता का प्रतिशत 19.35 है।

पति/परिवार का व्यवसाय

मानव जीवन के विविध पहलू–सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि एक दूसरे से सम्बन्धित व एक दूसरे के पूरक होते हैं। यद्यपि व्यवसाय का सम्बन्ध व्यक्ति के आर्थिक जीवन से होता है, किन्तु व्यवसाय की प्रकृति भी उनके जीवन की दिशा व दशा का निर्धारण करती है। व्यवसाय से आय, प्रतिष्ठा, शक्ति, सुरक्षा आदि ऐसे कारक जुड़े होते हैं, जिसमें व्यक्ति का आचार–विचार, रहन–सहन, मूल्य व जीवन शैली के स्तर का निर्धारण होता है। जो उसके राजनीतिकरण, रूची, दृष्टिकोण, मतदान, व्यवहार एवं सहभागिता को निर्धारित एवं प्रभावित करते हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता के व्यवसायिक स्तर का विश्लेषण भी महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य है। सिलाई, दुकान पर बैठाना, सब्जी बेचना, कृषि आदि कार्यों को निजी व्यवसाय वर्ग में रखा गया है तथा नौकरी में सरकारी तथा प्राईवेट दोनों श्रेणी के कार्यों को शामिल किया गया है। अन्य वर्ग में उनको रखा गया है जो घर में या बाहर अर्थोपार्जन वाले कार्य नहीं करते है।

तालिका संख्या 4.7

क्रम संख्या	पति/परिवार का व्यवसाय	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	निजी व्यवसाय	16	51.61
2	नौकरी	5	16.13
3	अन्य	10	32.26
कुल		31	100

पति/परिवार का व्यवसाय

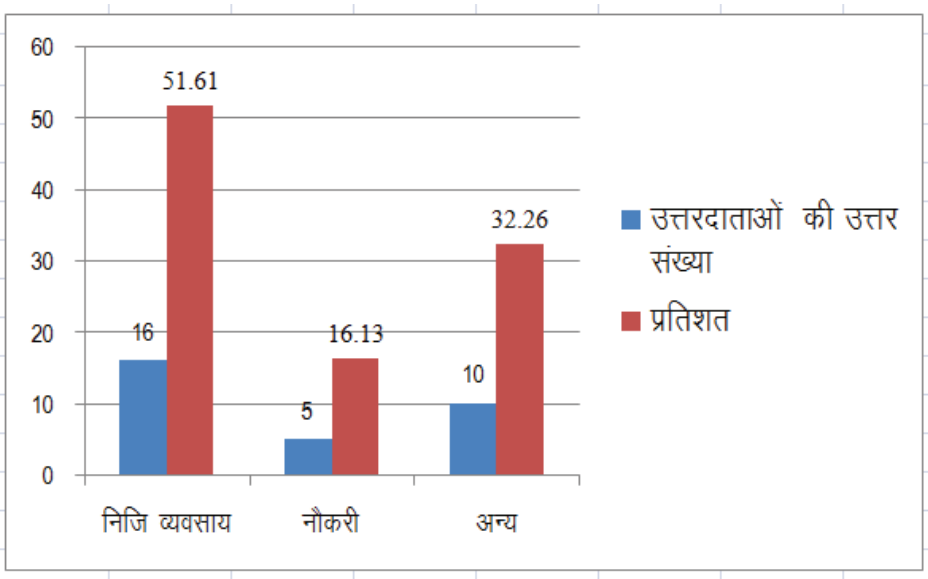

आवृति संख्या 4.7

तालिका संख्या 4.7 से स्पष्ट होता है कि कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिलाओं के 51.61 प्रतिशत पति निजि व्यवासाय करते है जबकि 16.13 प्रतिशत पति/परिवार नौकरी तथा 32.26 प्रतिशत अन्य कोई कार्य करते हैं।

धर्म के आधार पर

भारतीय संविधान द्वारा सांस्कृतिक विशेषता के अनुसार धर्म निरपेक्षता को अपनाया गया है। यहां सभी धर्मों के अनुयायियों को अपने अपने धर्म के अनुसार आचरण की स्वतंत्रता दी गई है। इसी कारण हिन्दू धर्म की बहुलता होने पर भी मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों के अनुयायी साथ–साथ रहते हैं।

समाज के संगठन और विकास में धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत गाँवों का देश है, गाँव आज भी आस्था और विकास के प्रतीक हैं। भारतीय गाँवों में धार्मिक प्रवृत्ति ज्यादा देखने को मिलती है। यहां यह विश्वास है कि **धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात् धर्म का जो नाश करेगा, धर्म उसका नाश कर देगा, पर जो**

धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी भी रक्षा करता है। इस कारण प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता का धर्म जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.8

क्रम संख्या	धर्म	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दु	26	83.87
2	मुस्लिम	–	–
3	सिक्ख	5	16.13
4	अन्य	–	–
कुल		31	100

धर्म के आधार पर

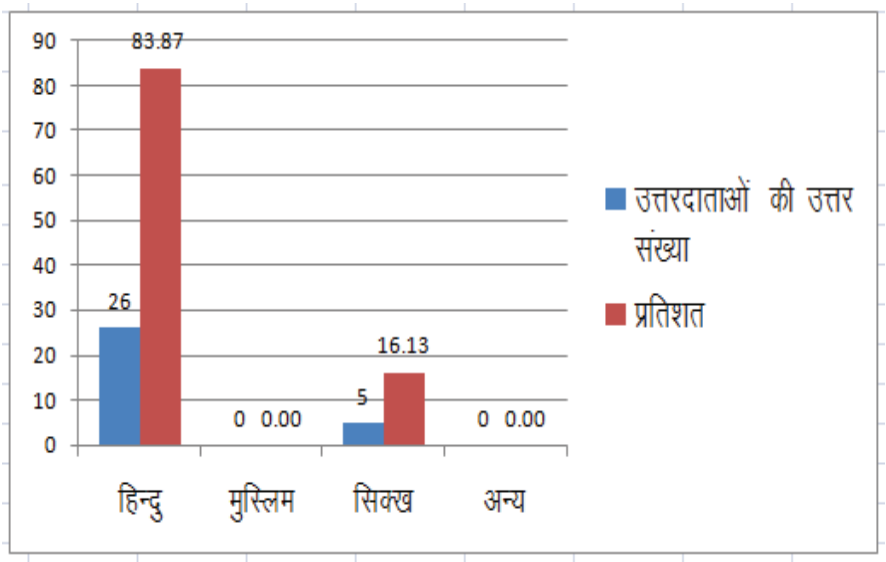

आवृति संख्या 4.8

भारत धर्म निरपेक्ष देश है। भारत में अनेक धर्मों के अनुयायी रहते हैं। तालिका संख्या 4.8 और आवृति संख्या 4.8 से स्पष्ट होता है कि कुरूक्षेत्र जिले में हिन्दू धर्म को मानने वालों का सबसे अधिक 83.87 प्रतिशत है तथा सिक्ख धर्म के लोगों का प्रतिशत 16.13 है। वहीं अन्य धर्म के जनप्रतिनिधियों की संख्या नगण्य है।

अतः हिन्दू धर्म की बहुलता होने के कारण राजनीति में सहभागिता का प्रतिशत भी उन्हीं का अधिक है ।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता जो अध्ययन की रीढ़ है के रूप में कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिका में निर्वाचित महिला सदस्यों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी राजनीति में रूची एवं राजनीति के प्रति उनकी चेतना तथा जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन में अनुसूची द्वारा लिए गये महिला सदस्यों से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में जिला संरचना का स्वरूप बदल गया है। यह स्वयंसिद्ध तथ्य है कि नगरपालिका में आरक्षण के कारण प्रत्येक वर्ग की महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही हैं साथ ही सहभागिता का आधार भी व्यापक हो रहा है।

इस भागीदारी में महिला प्रतिनिधियों की आयु भी महत्वपूर्ण कारक है कि किस उम्र की महिलाएँ राजनीति मे अधिक आती है अतः आयु के आधार पर 36 से 45 वर्ष की आयु के लोगो का प्रतिशत 51.61 रहा है वहीं 56 से अधिक आयु की महिला प्रतिनिधियों का प्रतिशत 9.68 रहा है। अतः मध्यम आयु की महिलाएँ अधिकतम संख्या में नगर पार्षद् पद पर आ रही हैं।

शिक्षा के प्रति जनता में चेतना बढ़ने से शिक्षित महिलाएँ ही नगर पार्षद् की प्रतिनिधि के रूप में चुनी जा रहीं हैं। साथ ही राजनीति में उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही सफल रहें हैं जो उनकी राजनीतिक जानकारी एवं जागरूकता में शिक्षा की भूमिका एवं महत्त्व को उजागर करता है।

वैवाहिक स्थिति के आधार पर स्पष्ट होता है कि विवाह आज भी भारतीय समाज की परम्परा व जीवन पद्धति है। वह आज भी निरन्तरता लिये हुए है। अध्ययन में पाया गया कि 87.10 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं। वे अपने उत्तरदायित्वों को अच्छे ढ़ंग से निभा रही हैं।

महिला सदस्यों में 54.84 प्रतिशत संयुक्त परिवार से है। संयुक्त परिवार की महिलाएँ स्थानीय राजनीति में अधिक सहभागी हो रहीं हैं।

आज के समय में राजनीति, धर्म एवं जाति पर आधारित हो गई है। देश के उच्च स्तर के राजनीतिज्ञ धर्म और जाति की आड़ लेकर शक्ति और सत्ता को प्राप्त करना चाहते हैं और अब यही हाल स्थानीय निकायों में है। क्योकि इन संस्थाओं के चुनाव में अधिकांश उम्मीदवार जाति एवं धर्म के आधार पर विजयी हो रहे हैं। फिर भी इन संस्थाओं में एक परिर्वतन अवश्य हुआ है। अब नगरपालिकाओं में 74वें संविधान संशोधन के द्वारा आरक्षण प्राप्त होने के बाद महिला पार्षदों का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। धर्म के आधार पर समाज में हिन्दू धर्म को मानने वालो की संख्या अन्य धर्मों से अधिक है। जो उनकी जनसंख्या के अनुरूप है।

जाति के आधार पर सामान्य वर्ग का प्रतिशत 45.16 रहा है। जबकि अनुसूचित जाति का प्रतिशत 12.90, पिछड़ा वर्ग का प्रतिशत 29.03 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि समाज में उच्च स्थान रखने वाली जाति वर्ग अर्थात सामान्य वर्ग का राजनिति में भागीदरी का स्तर अधिक है। कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में उच्च वर्ग के व्यापारियों का प्रतिनिधित्व अन्य वर्गों की अपेक्षा अधिक है। 74वें संविधान संशोधन के द्वारा निम्न वर्गों को मिले आरक्षण के कारण आज नगरपालिकाओं में सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो रहा है। लेकिन फिर भी जिन उम्मीदवारों के आय के साधन जितने अधिक होते हैं वे उतने ही सक्रियता से इन संस्थाओं मे भाग लेते हैं। इसलिये वर्तमान मे राजनीति पैसे की दास होती जा रही है।

महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक चेतना एवं जागरूकता का विश्लेषण

राजनीतिक जागरूकता का अर्थ है, व्यवस्था के प्रति समझ तथा राजनीतिक संस्थाओं एवं प्रकियाओं के बारे में जानकारी। यह वह प्रकिया होती है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था एवं उसके मूल्यो के प्रति चेतना विकसित करते हैं, उसमें रूचि लेते हैं तथा इसके फलस्वरूप व्यक्ति देश में हो रही विभिन्न राजनीतिक घटनाओं, मुद्दों

तथा परिर्वतनो के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं। राजनीतिक जागरूकता का स्तर उच्च होना लोकतंत्र के सफल संचालन में दूरगामी परिणामों का द्योतक है तथा साथ ही राजनीतिक जानकारी तथा राजनीतिक जागरूकता का उच्च स्तर राजनीतिक प्रकियाओं मे अर्थपूर्ण सहभागिता को बढ़ाता है।

राजनीतिक अभिमत राजनीतिक व्यवहार के निर्धारण में सहायक होता है। राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप को, संविधान एवं शासन का स्वरूप, कार्यशैली एवं प्रबन्ध क्षमता, राजनीतिक नेतृत्व, दलीय व्यवस्था, राजनीतिक दलों के कार्यक्रम, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय तथा तात्कालिक परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रभावित करती हैं। जहाँ सकारात्मक अभिमत राजनीतिक व्यवस्था को सुदृढ़ता एवं स्थायित्व प्रदान करता है, संकटों एवं चुनौतियों का सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करता है, वहीं नकारात्मक अभिमत राज्य निर्माण एवं राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को कमजोर करता है एवं लोगों की राजनीतिक व्यवस्था में भागीदारी एवं सहभागिता को हानिकारक अंजाम दे सकता है। अतः किसी भी शासन व्यवस्था के सफल संचालन हेतु राजनीतिक भागीदारी एवं सहभागिता को बढ़ाने के लिए नागरिकों की सतत् जागरूकता एवं सकारात्मक राजनीतिक दृष्टिकोण अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण है।

अतः प्रस्तुत अध्याय में नगरपालिका के सदस्यों की राजनीतिक जागरूकता एवं अभिमत को जानने का प्रयास किया गया है। इसमें उत्तरदाताओं से राजनीतिक विषयों में रूची राजनीतिक घटनाओं की जानकारी के माध्यम, नगरपालिका से संबंधित जानकारी, 74वें संविधान संशोधन के उपरान्त नगरपालिका की संगठन एवं कार्यशैली में किये गये परिवर्तनों के प्रभाव, आरक्षण व्यवस्था, चुनाव व्यवस्था, चुनाव सम्बन्धी समस्याओं एवं सुझावों के उत्तर जानने का प्रयास किया गया है जो न केवल भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की दशा एवं दिशा के निर्धारण तथा लोकतंत्र की सफलता एवं सुदृढ़ता के मूल्यांकन से भी सम्बधिंत है।

परिवार की राजनीति में सक्रियता

परिवार की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार वह संस्था है जहां व्यक्ति सामंजस्य, प्रेम, सद्भाव, त्याग आदि गुण ग्रहण करता है। पारिवारिक परिवेश उसके विकास, व्यवहार, भावी जीवन की दिशा एवं दशा का भी निर्धारण करता है। इसी आधार पर सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि पारिवारिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के सदस्यों की राजनीतिक जानकारी एवं सहभागिता ज्यादा होती है अतः उत्तरदाताओं से उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.9

क्रम संख्या	राजनीति में सक्रियता	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	17	54.84
2	न्हीं	14	45.16
कुल		31	100

परिवार की राजनीति में सक्रियता

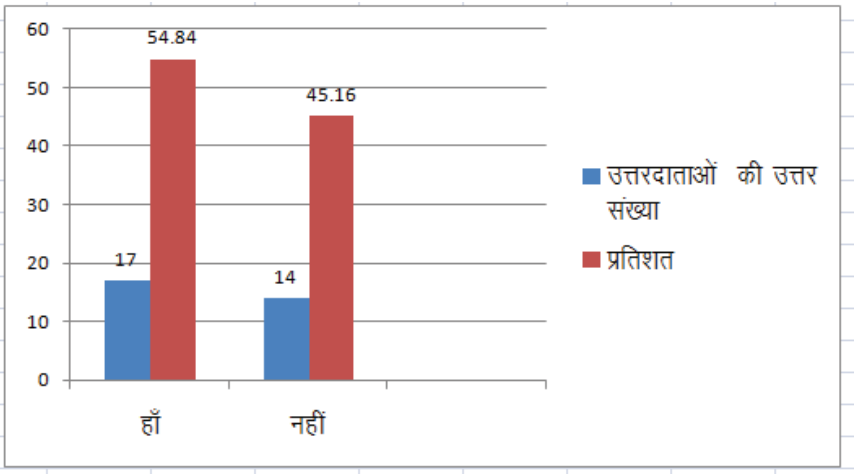

आवृति संख्या 4.9

कुरूक्षेत्र जिले के पार्षदो में से 54.84 प्रतिशत पार्षद् ऐसे हैं जिसके परिवारों में कोई न कोई व्यक्ति राजनीति में रहा था या किसी पद विशेष पर रहा है या पार्षदों के परिवार राजनीति में सक्रिय है जबकि 45.16 पार्षदों के परिवार राजनीति मे सक्रिय नही हैं।

उत्तरदाताओं के राजनीति में प्रवेश के प्ररेणा स्रोत

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपने जीवन का संचालन करता है। इसी तरह उसके द्वारा कोई भी क्रिया, गतिविधि अथवा व्यवहार शून्य में नहीं किया जाता हैं यह सब किसी न किसी प्रेरक का परिणाम होता है। व्यक्ति परिवार से लेकर शिक्षण–संस्थाओं, मित्र मण्डली, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों आदि से न केवल सीखता है बल्कि प्रेरणा भी प्राप्त करता है तथा उसी के अनुरूप अपना व्यवहार करता है। इसी संदर्भ में उत्तरदाताओं से उनके राजनीति में आने के प्रेरणा स्रोत की जानकारी प्राप्त की गई।

तालिका संख्या 4.10

क्रम संख्या	प्रेरणा स्रोत	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	परिवार के सदस्य	21	67.74
2	मित्र	1	3.23
3	स्वयं	9	29.03
4	अन्य	–	–
कुल		31	100

उत्तरदाताओं के राजनीति में प्रवेश के प्रेरणा स्रोत

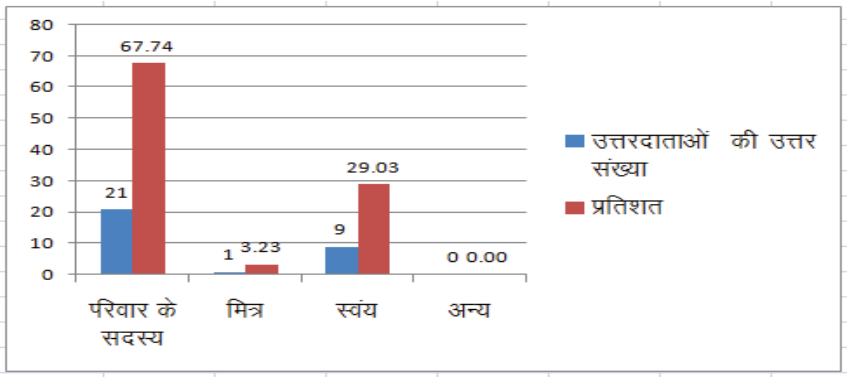

आवृति संख्या 4.10

उपर्युक्त तालिका 4.10 एवं आवृति 4.10 में कुरूक्षेत्र जिले की महिला पार्षदों की राजनीति में प्रवेश के प्रेरणा स्रोत को दर्शाया गया है। इन आँकड़ो के आधार पर 29.03 प्रतिशत पार्षदों का स्वविवेक से चुनाव में भाग लेने का निर्णय, 67.74 पार्षद् परिवार

वालों के कहने पर चुनाव में भाग लेने का निर्णय तथा 3.23 प्रतिशत पार्षद्ों का मित्रों के कहने पर चुनाव में भाग लेने का निर्णय रहा है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति द्वारा अपनी भूमिका के निर्वाहन में परिवार के सदस्यों की प्रेरणा सर्वाधिक होती है किन्तु शिक्षण संस्थाओं, मित्र मण्डली, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों या संस्थाओ की भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं आंकी जा सकती, जो कि राजनीतिक सामाजीकरण के महत्त्वपूर्ण अभिकरण माने जाते हैं।

उत्तरदाताओं को परिवार द्वारा राजनीतिक जानकारी

भारतीय राजनीति में परिवार का अत्यधिक प्रभाव देखने को मिलता है। बहुत से परिवारों में राजनीति में सक्रियता, राजनीतिक दलों से सम्बन्ध एवं राजनीतिक सदस्यता पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती है। इसका भी राजनीति पर काफी प्रभाव पड़ता है। अतः इस तथ्य को जानने के लिये कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिका के पार्षदों से पूछा गया कि आपको परिवार द्वारा कितनी राजनीतिक जानकारी मिलती है ।

तालिका संख्या 4.11

क्रम संख्या	परिवार द्वारा राजनीतिक जानकारी	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	25	80.65
2	नहीं	6	19.35
कुल		31	100

परिवार द्वारा राजनीतिक जानकारी

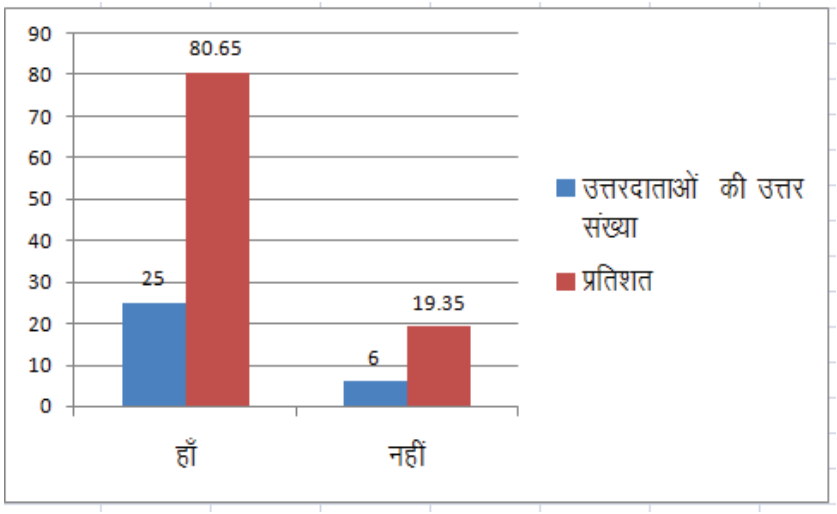

आवृति 4.11

उपर्युक्त तालिका 4.11 से स्पष्ट है कि कुरूक्षेत्र जिले 80.65 प्रतिशत पार्षद्ों को परिवार द्वारा राजनीतिक विषयों की जानकारी मिलती है। 19.35 प्रतिशत पार्षद्ों का कहना है कि उन्हें परिवार द्वारा राजनीतिक विषयों की जानकारी प्राप्त नही होती है।

परिवार में पारिवारिक निर्णय का आधार

कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिका के महिला पार्षदों से पूछा गया कि आपके परिवार में पारिवारिक निर्णय किस प्रकार लिए जाते हैं।

तालिका संख्या 4.12

क्रम संख्या	परिवार में पारिवारिक निर्णय	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	सभी सदस्य द्वारा एक साथ	28	90.32
2	वरिष्ठ सदस्यो द्वारा	2	6.45
3	पिता द्वारा	1	3.23
4	माता द्वारा	–	–
कुल		31	100

परिवार में पारिवारिक निर्णय का आधार

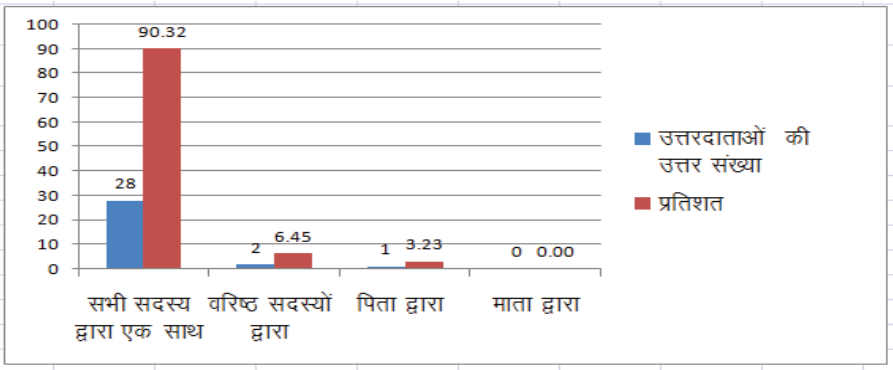

आवृति 4.12

उपर्युक्त तालिका 4.12 से स्पष्ट है कि कुरूक्षेत्र जिले के 90.32 प्रतिशत पार्षदों के परिवारिक निर्णय सभी सदस्य एक साथ बैठकर लेते हैं। 6.45 प्रतिशत निर्णय वरिष्ठ सदस्यों द्वारा लिये जाते हैं तथा 3.23 प्रतिशत निर्णय पिता द्वारा लिये जाते हैं।

उत्तरदाताओं को राजनीतिक घटनाओं की जानकारी

लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की राजनीति के प्रति जानकारी, जागरूकता एवं सहभागिता पर निर्भर करती है जो कि विभिन्न संचार माध्यमों–रेडियो, टी.वी. समाचार पत्र, विचार विमर्श, चौपाल में होने वाली गोष्ठियां, परिवार के सदस्यों व मित्र मण्डलियों से चर्चा तथा विद्वानों की पुस्तकों द्वारा प्राप्त की जा सकती है। अतः उत्तरदाताओं से उनके राजनीतिक जानकारी प्राप्त करने के माध्यमों, राजनीतिक विषयों पर चर्चा के बारे में पूछा गया है।

तालिका संख्या 4.13

क्रम संख्या	राजनीतिक घटनाओं की जानकारी	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	टी.वी.	31	100
2	रेडियो	–	–
3	समाचार पत्र	31	100
4	विचार विमर्श	31	100
5	बैंठक	–	–
कुल		93	300

नोटः एकाधिक उत्तर होने के कारण संख्या 31 से अधिक है

राजनीतिक घटनाओं की जानकारी

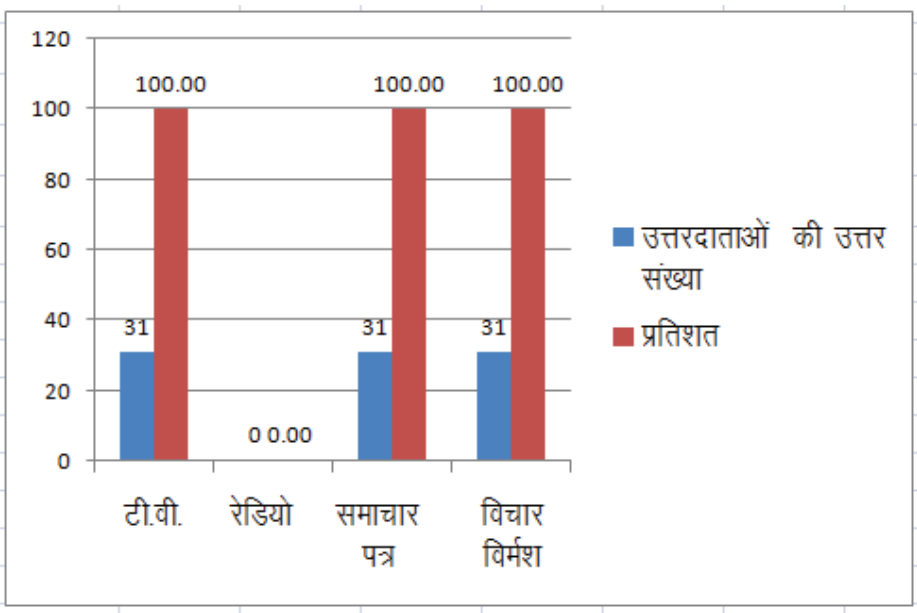

आवृति 4.13

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.13 से स्पष्ट है कुरूक्षेत्र जिले के 100 प्रतिशत पार्षद टी.वी. के माध्यम से देश–विदेश की राजनीतिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। 100 प्रतिशत पार्षद समाचार पत्रों को मुख्य स्रोत बताते हैं। 100 प्रतिशत पार्षद विचार विमर्श को राजनीतिक घटनाओ की जानकारी प्राप्त करने का माध्यम बताते हैं। रेडियो एवं बैंठक को किसी पार्षद ने राजनीतिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं बताया है।

अतः स्पष्ट होता है कि टी.वी. सम्प्रेषण का दुनिया में महत्त्वपूर्ण स्थान है। टेलीविजन सम्प्रेषण श्रव्य एवं दृश्य दोनों की ही साधन है। टेलीविजन में प्रसारित सूचनाएं एवं कार्यक्रम श्रव्य के साथ–साथ दृश्य होने के कारण अपेक्षाकृत अधिक स्थाई प्रभावं छोड़ते है। इसलिए सबसे ज्यादा 100 प्रतिशत उत्तरदाता टी.वी. में रूची रखते हैं, जो कि उनकी राजनीतिक विषयों के प्रति रुचि एवं जागरूकता को प्रकट करती है।

चुनाव प्रचार में महिलाओं का योगदान

चुनाव में प्रचार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चुनाव प्रचार में पुरूषो के साथ–साथ महिलाओं का योगदान भी आवश्यक है। अतः उत्तरदाताओं से चुनाव प्रचार में महिलाओं के योगदान के बारे में पूछा गया है।

तालिका संख्या 4.14

क्रम संख्या	चुनाव प्रचार में महिलाओं का योगदान	उत्तरदाताओ की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	31	100
2	नहीं	–	–
कुल		31	100

चुनाव प्रचार में महिलाओं का योगदान

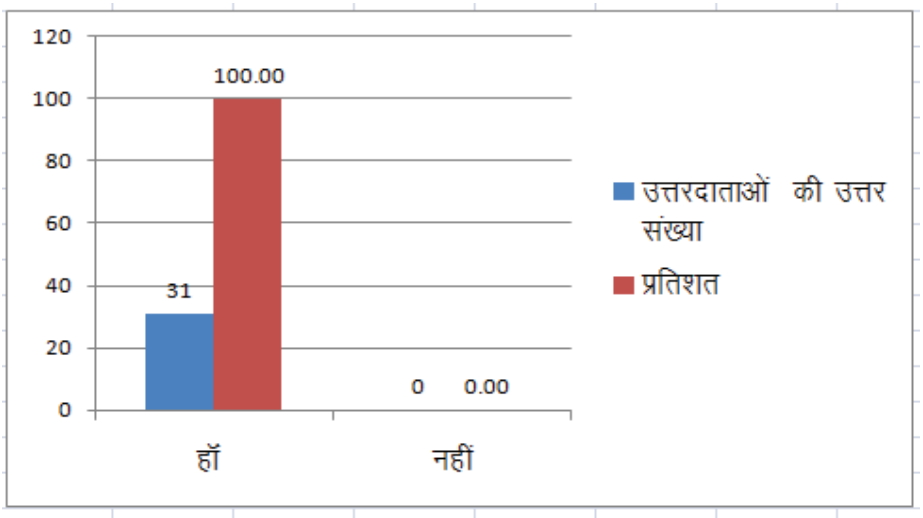

आवृति 4.14

उपर्युक्त तालिका 4.14 से स्पष्ट है की कुरूक्षेत्र जिले के 100 प्रतिशत पार्षद चुनाव प्रचार में महिलाओं के योगदान को उचित समझती है।

देश/प्रदेश के शीर्ष नेताओं की जानकारी

लोकतन्त्र जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन होता है। अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र में जनप्रतिनिधियों के माध्यम से शासन का संचालन किया जाता है। कुरूक्षेत्र जिले के पार्षदों की राजनीतिक चेतना एवं जागरूकता को मापने के लिये देश/प्रदेश के शीर्ष नेताओ के बारे मे पूछा गया है ।

तालिका संख्या 4.15

क्रम संख्या	नेताओं कें पद	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	राष्ट्रपति	31	100
2	भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री	31	100
3	राज्य का मुख्यमंत्री	31	100
4	राज्यपाल	31	100
कुल		124	400

नोटः एकाधिक उत्तर होने के कारण संख्या 31 से अधिक है

देश/प्रदेश के शीर्ष नेताओं की जानकारी

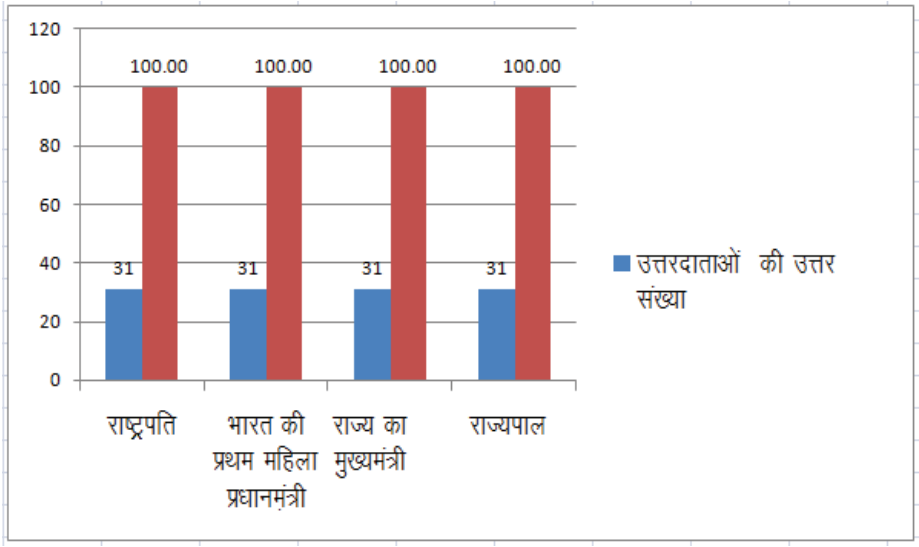

आवृति 4.15

तालिका संख्या 4.15 से स्पष्ट है कि कुरूक्षेत्र जिले के 100 प्रतिशत पार्षदों को देश/प्रदेश के शीर्ष नेताओं जैसे राष्ट्रपति, भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री, राज्य का मुख्यमंत्री की जानकारी है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्थानीय निकाय के प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतिनिधियों की जानकारी है।

उत्तरदाताओं को निर्वाचन के पश्चात प्रशिक्षण

निर्वाचन के पश्चात निर्वाचित पार्षदों के लिए प्रशिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण कारक है। प्रशिक्षण से कार्यकुशलता और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है, जो कि योजनाओं को क्रियान्वित करने में सहायक होता है। अतः उत्तरदाताओं से निर्वाचन के पश्चात् दिये जाने वाले के प्रशिक्षण के बारे में पूछा गया है।

तालिका संख्या 4.16

क्रम संख्या	प्रशिक्षण	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	31	100
2	नहीं	–	–
कुल		31	100

उत्तरदाताओं को निर्वाचन के पश्चात् प्रशिक्षण

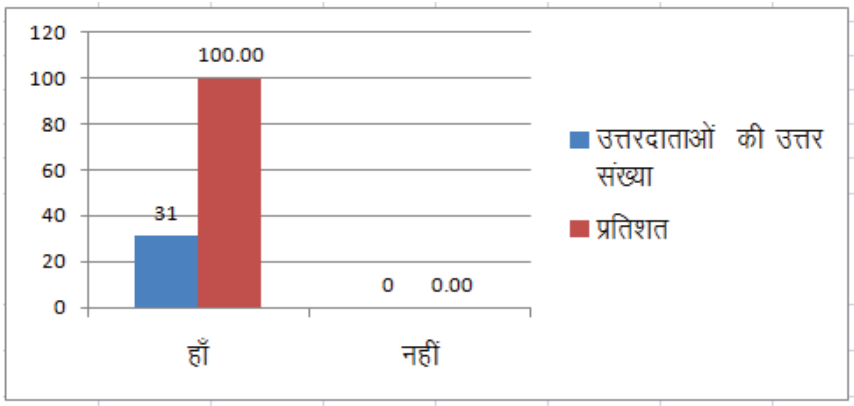

आवृति 4.16

तालिका संख्या 4.16 से स्पष्ट है कि कुरूक्षेत्र जिले के 100 प्रतिशत पार्षद निर्वाचन के पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त करना जरूरी समझते है।

प्रशिक्षण का राजनीतिक जागरूकता एंव ज्ञान पर प्रभाव

राजनीतिक सामाजीकरण, सीख की वह प्रकिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति राजनीति के आदर्शो एवं मूल्यों का आन्तरीकरण करता है तथा जिसके द्वारा राजनीतिक मूल्य एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते है।

प्रशिक्षण के माध्यम से ही कार्यरत सदस्यों को अपने कार्यों को सही ढ़ंग से करने का ज्ञान प्राप्त होता है और नई योजनाओं को सही ढ़ंग से क्रियान्वित करने की भी जानकारी प्राप्त होती है। अतः निर्वाचित उत्तरदाताओं से प्रशिक्षण का राजनीतिक जागरूकता एंव ज्ञान पर प्रभाव बारे में प्रश्न किया गया है।

तालिका संख्या 4.17

क्रम संख्या	प्रशिक्षण का प्रभाव	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	31	100
2	नहीं	–	–
कुल		31	100

प्रशिक्षण का राजनीतिक जागरूकता एंव ज्ञान पर प्रभाव

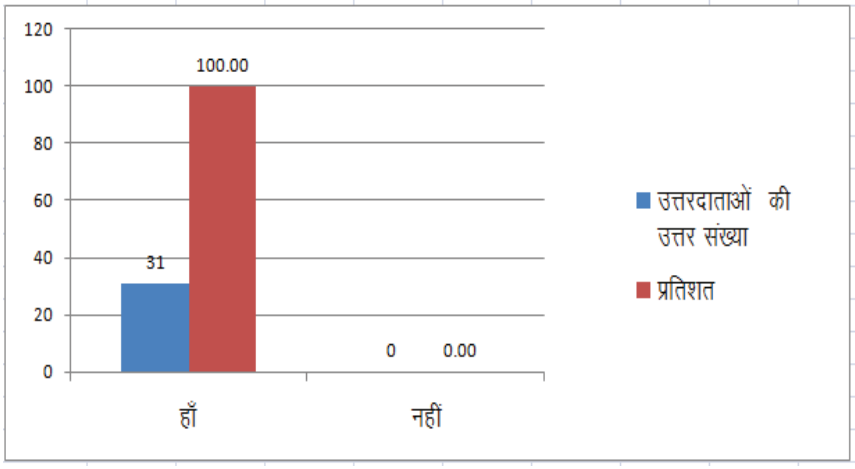

आवृति 4.17

कुरूक्षेत्र जिले के 100 प्रतिशत पार्षद प्रशिक्षण के पक्ष में हैं और प्रशिक्षण को राजनीतिक जागरूकता एंव ज्ञान को बढ़ाने में सहायक बताया है।

कुरूक्षेत्र जिले में नगरपालिकाओं की संख्या

कुरूक्षेत्र जिले को प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से 1 नगर परिषद् (थानेसर) तथा 3 नगरपालिकाओं क्रमशः पिहोवा, शाहबाद मारकण्डा, लाड़वा में बाँटा गया है। नगर परिषद (थानेसर) में 31 वार्ड, नगरपालिका पिहोवा में 19 वार्ड, शाहबाद मारकण्डा में 17 वार्ड तथा लाड़वा में 15 वार्ड है। इस प्रकार कुल वार्डों की संख्या 82 है।

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की राजनीतिक चेतना एवं जागरूकता को जानने के लिए उनसे कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं की कुल संख्या के बारे में प्रश्न किया गया है।

तालिका संख्या 4.18

क्रम संख्या	नगरपालिकाओं की संख्या	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	5	2	6.45
2	4	29	93.55
3	3	–	–
4	6	–	–
कुल		31	100

कुरूक्षेत्र जिले में नगरपालिकाओं की संख्या

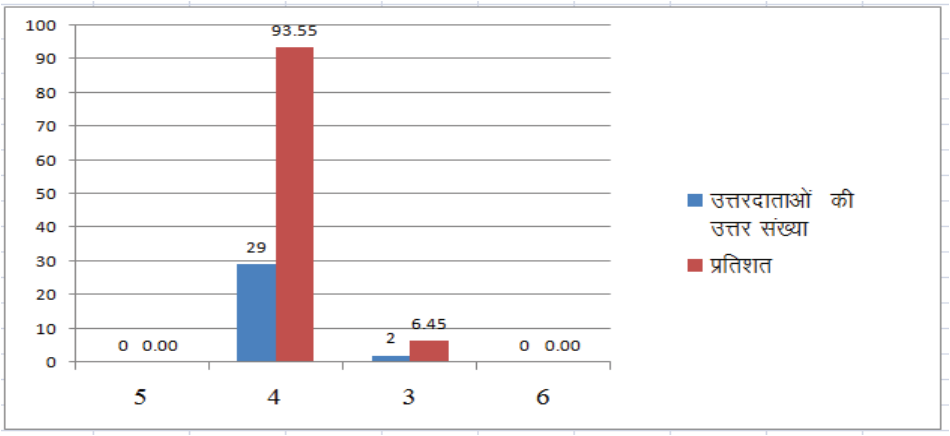

आवृति 4.18

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.18 से स्पष्ट होता है कि 93.55 प्रतिशत उत्तरदाता कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं की संख्या के बारे में सही जानकारी रखती हैं और 6.45 प्रतिशत जानकारी नही रखती हैं। अतः यह तथ्य महिला सदस्यों कि सक्रिय जागरूकता व चेतना को दृष्टिगोचर करते हैं।

नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव

कुरूक्षेत्र जिले में नगरपालिका परिषद् के सदस्य अपने सदस्यों में से ही एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं। नगरपालिका अध्यक्ष का पद बहुत ही प्रतिष्ठा का पद माना जाता है। यह परिषद् की सभाओं की अध्यक्षता करता है तथा विचार विमर्श में परिषद् के सदस्यों का मार्गदर्शन भी करता है। नगरपालिका के प्रशासनिक कार्यों का सीधा नियंत्रण अध्यक्ष के द्वारा किया जाता है। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष परिषद् की सभाओं की अध्यक्षता करता है।

अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के अतिरिक्त एक कार्यपालक पदाधिकारी भी होता है, जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है। यह नगरपालिका कार्यालय का प्रभारी भी होता है। इसकी सहायता के लिए एक पदाधिकारी तथा कर्मचारी होते हैं।

अतः कुरूक्षेत्र जिले की महिला उत्तरदाताओ से पूछा गया कि नगरपालिका अध्यक्ष का चयन किस प्रकार किया जाता है।

तालिका संख्या 4.19

क्रम संख्या	अध्यक्ष का चुनाव	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	प्रत्यक्ष	–	–
2	अप्रत्यक्ष	31	100
कुल		31	100

नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव

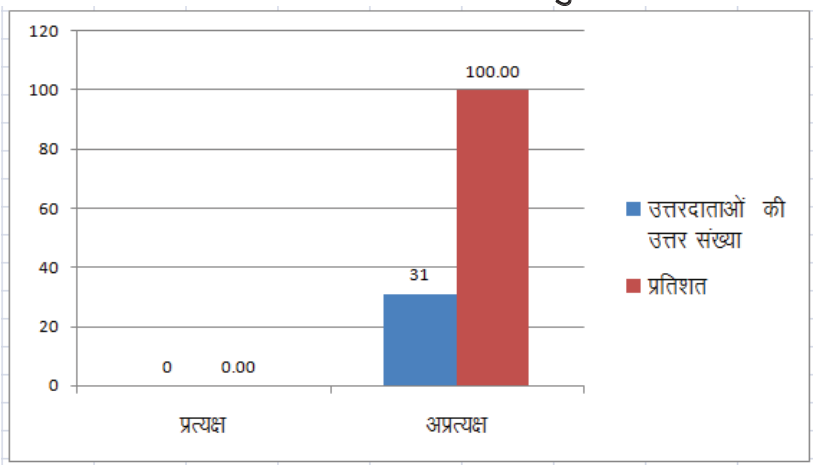

आवृति 4.19

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.19 से स्पष्ट होता है कि 100 प्रतिशत पार्षद नगरपालिका के अध्यक्ष के चुनाव की जानकारी रखती हैं और एक भी ऐसा पार्षद नहीं है जिसको नगरपालिका के अध्यक्ष की चुनाव प्रकिया के बारे में ज्ञान नही है।

अतः यह तथ्य महिला सदस्यों की सक्रिय जागरूकता व चेतना को दृष्टिगोचर करता है।

74वें संविधान सशोंधन में महिलाओं को प्राप्त आरक्षण

74वाँ संविधान संशोधन नगरीय संस्थाओ के लिये उठाया गया एक क्रान्तिकारी कदम था, जिसकी वजह से आज नगरीय संस्थाओ को संवैधानिक अधिकार प्रदान किया गया है। इस संशोधन के द्वारा महिलाओं के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाया गया कि उन्हें राजनीति में प्रवेश करने के लिये नगरीय संस्थाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई तथा दलित जाति के लोगो को राजनीति में अनिवार्य रूप से प्रवेश कराने के लिये अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी जाति के लिये आरक्षण का प्रावधान किया गया है। अतः कुरूक्षेत्र जिले की महिला उत्तरदाताओं से 74वें संविधान संशोधन में महिलाओं को प्राप्त आरक्षण के बारे में पूछा गया है।

तालिका संख्या 4.20

क्रम संख्या	महिलाओं को प्राप्त आरक्षण	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	30 प्रतिशत	–	–
2	33 प्रतिशत	31	100
3	43 प्रतिशत	–	–
4	50 प्रतिशत	–	–
कुल		31	100

74वें संविधान सशोंधन में महिलाओं को प्राप्त आरक्षण

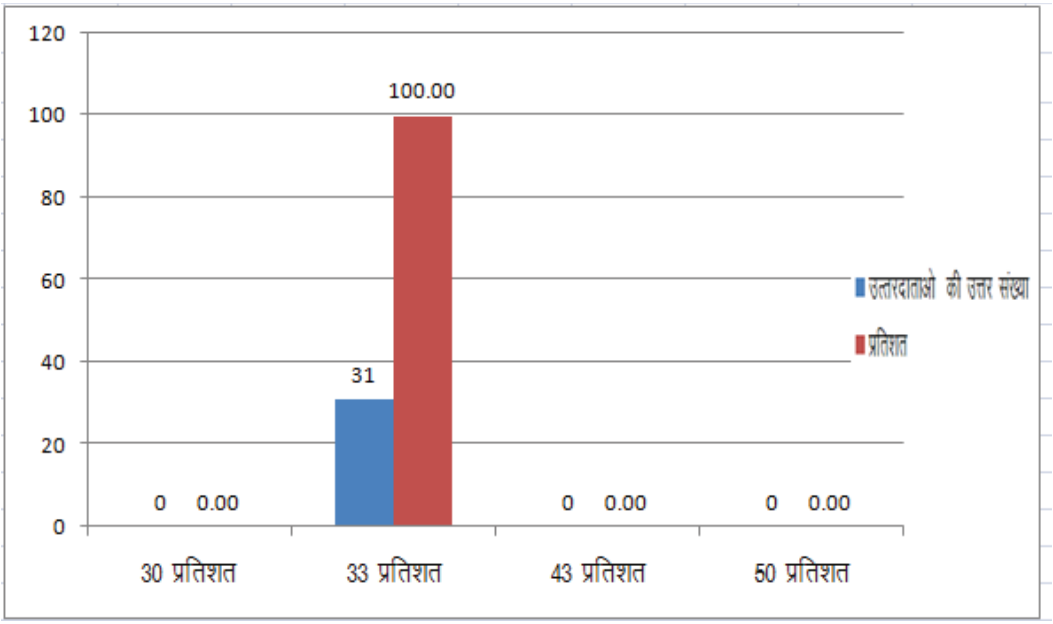

आवृति 4.20

कुरूक्षेत्र जिले में 100 प्रतिशत पार्षदों को 74वें संविधान संशोधन के तहत महिलाओं को मिलने वाले आरक्षण की जानकारी है। जो महिलाओं की सक्रिय जागरूकता व चेतना को दर्शाता है।

चुनाव व्यवस्था में कमियों के सन्दर्भ में उत्तरदाता का मत

भारत में चुनाव एक ऐसी प्रकिया है जो एक व्यक्ति द्वारा पूरी नही की जा सकती है। वर्तमान चुनाव व्यवस्था को अधिक अच्छा और साफ सुथरा बनाने के लिये इस व्यवस्था में कर्मचारियों और अधिकारियों के साथ साथ आम जनता के साथ की भी जरूरत होती है। अतः चुनाव व्यवस्था को साफ सुथरा, भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिये उत्तरदाताओं से वर्तमान चुनाव व्यवस्था में कमियों के सन्दर्भ में प्रश्न पूछा गया है।

तालिका संख्या 4.21

क्रम संख्या	कमियाँ	उत्तरदाताओं की उत्तर संख्या	प्रतिशत
1	यह अपव्य व भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।	31	100
2	तनाव व हिंसा बढ़ावा देती है।	5	16.13
3	चुनाव में सरकारी साधनों का दुरूपयोग अधिक होता है।	18	58.06
4	चुनाव में जातिवाद का बोलबाला अधिक रहता है ।	31	100
कुल		85.00	274.19

नोटः एकाधिक उत्तर होने के कारण संख्या 31 से अधिक है

चुनाव व्यवस्था में कमियों के सन्दर्भ में उत्तरदाता का मत

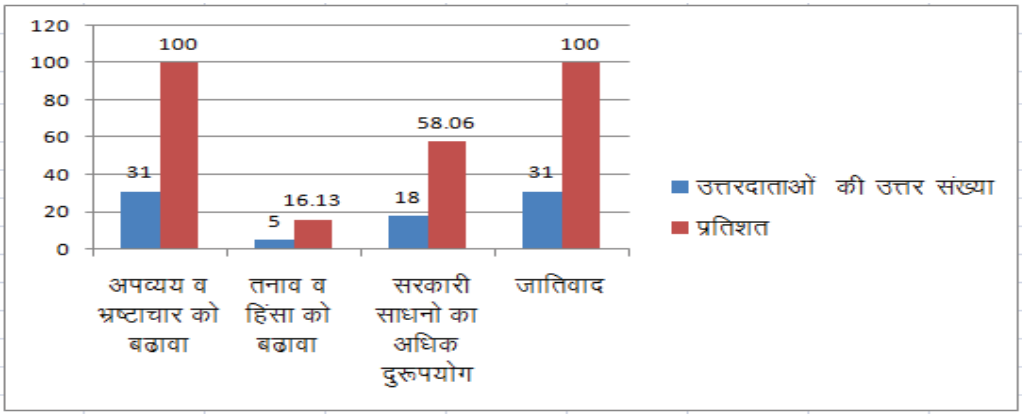

आवृति 4.21

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.21 से स्पष्ट होता है कि वर्तमान चुनाव व्यवस्था में कुछ कमियाँ हैं। 31 उत्तरदाताओं में से 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव व्यवस्था में सबसे बड़ी कमी जातिवाद को बताया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह भी माना है कि यह अपव्यय व भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने तनाव व हिंसा को बढावा देना व 58 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव में सरकारी साधनों का दुरूपयोग अधिक होता है को बताया है।

इससे स्पष्ट होता है कि चुनाव व्यवस्था में जातिवाद, तनाव व हिंसात्मक गतिविधियाँ सबसे बडी समस्या है, जिन्हें समाप्त किया जाना लोकतंत्र में सहभागिता की दृष्टि से अति अवाश्यक है।

74वें संविधान संशोधन के पश्चात् नगरीय संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में बहुत बड़ा परिर्वतन आया है। इस संशोधन से पूर्व कुरूक्षेत्र जनपद की नगरपालिकाओं में स्त्री पुरूष के प्रतिनिधित्व के अनुपात में काफी अन्तर था। अतः इन संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी न के समान थी, परन्तु 74वें संविधान संशोधन द्वारा महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य कर देने से महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ गया है और वर्तमान में महिलाएँ भी पुरूषों के बराबर राजनीतिक कार्यों में बढ–चढ़कर हिस्सा ले रहीं हैं।

कुरूक्षेत्र जनपद की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं के अनुसूची से ज्ञात होता है कि महिला सदस्य समाचार पत्रों, टेलीविजन एवं विचार–विमर्श के माध्यम से राजनीतिक मुद्दों एवं घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर रही हैं। किन्तु इस संदर्भ में टेलीविजन एवं समाचार पत्र की भूमिका सर्वाधिक है अतः स्पष्ट है कि राजनीतिक जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रिन्ट मीडिया की तुलना में इलैक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका अधिक होती है।

कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं में निर्वाचित महिला उत्तरदाताओं को जहाँ उन्हें एक ओर देश के शीर्ष नेताओं जैसे भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तथा राज्य

के मुख्यमंत्री का ज्ञान है वहीं दूसरी ओर जब उनसे नगरपालिका के कार्य–कलापों जैसे नगरपालिका में अध्यक्ष के चुनाव प्रकिया, उनके क्षेत्र में नगरपालिका की संख्या के बारे में पूछा गया तो सर्वाधिक उतरदाताओं ने सही जानकारी दी। जो उनकी राजनीतिक जागरूकता एवं रूचि को प्रकट करती है। साथ ही महिलाएँ 74वें संविधान संशोधन के उपरान्त किये गये परिवर्तनों की जानकारी भी रखती हैं।

कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं की महिला पार्षदों से ज्ञात हुआ है कि जनप्रतिनिधियो की राजनीतिक चेतना को परिवार की राजनीतिक विरासत प्रभावित करती है। इसका पार्षदों पर अत्यधिक प्रभाव देखने को मिलता है। सर्वाधिक पार्षदों ने अपने पारिवारिक सदस्यों से प्रभावित होकर नगरीय संस्थाओं के चुनावों में भाग लिया है और इनको परिवार से भी अनुभव प्राप्त होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के सदस्यों को राजनीतिक जानकारी एवं सहभागिता ज्यादा होती है।

प्रशिक्षण एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से व्यक्ति कार्य और योजनाओं को क्रियान्वित करने की प्रकिया को सीखता है। कुरूक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं 100 प्रतिशत पार्षद इस बात से सहमत हैं कि प्रशिक्षण राजनीतिक जागरूकता एंव ज्ञान को बढ़ाने में सहयक है।